Year-3 Volume: IV, October-December, 2021 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

लघु सिनेमा में सामाजिक संदेश का अध्ययन

(हिंदी लघु फिल्मों के विशेष संदर्भ में)

अंजना शर्मा
पीएच.डी. शोधार्थी
मा.च.रा.प.सं.वि.वि.
इमेल: anjanaamu@gmail.com

शोध सारांश

जन माध्यमों के डिजिटल स्वरूप व सोशल मीडिया ने संचार को नए आयाम प्रदान कर दिए हैं। नव संचार माध्यमों ने न केवल सृजनशीलता को बढ़ाया है बल्कि इस नव सृजन को नए दर्शक भी दिए हैं। सोशल मीडिया में यूट्यूब ने उन्हें पंख फैलाने का अवसर दिया है, जिनके अंतर में कला मौजूद तो थी लेकिन उनके पास उस कला के प्रदर्शन के लिए संसाधनों का अभाव था। सोशल मीडिया ने जहां ऐसे लोगों की सृजनात्मकता को नए आयाम दिए हैं, तो दर्शकों के सामने भी लघु सिनेमा के रूप में नए विकल्प उपस्थित कर दिए हैं। यूट्यूब लघु सिनेमा के प्रसारण का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरा है। समानांतर सिनेमा के बरक्स माना जाने वाला लघु सिनेमा, इसकी कहानियां और उनमें मौजूद संदेश दर्शकों को अंदर तक छू जाते हैं। लघु सिनेमा पर व्यवसायिक दबाव नहीं होता और इसलिए केवल मनोरंजन के लिए उसका सृजन नहीं होता।

प्रस्तावना

भारतीय फिल्मोद्योग दुनिया के सबसे बड़े फिल्मोद्योगों में से एक माना जाता है। प्रतिवर्ष यहां 20 भाषाओं में 1500 से 2000 तक फिल्मों का निर्माण होता है। फिल्मों के निर्माण से लेकर उनके प्रदर्शन तक की पूरी प्रक्रिया इतनी जटिल और खर्चीली है कि आम लोगों के लिए अभिव्यक्ति के इस माध्यम का उपयोग करना कठिन ही नहीं असंभव सा लगता है। ऐसे में डिजिटल स्वरूप में सोशल मीडिया (यूट्यूब, फेसबुक इत्यादि) के रूप में उभरे नए जन माध्यमों ने शौकिया फिल्मकारों व बहुत कम बजट रखने वाले सृजनशील लोगों को कला प्रदर्शन के नए मंच उपलब्ध कराए हैं।

इंटरनेट के माध्यम से यूट्यूब व फेसबुक के प्रदर्शन के नए मंच के रूप में उभरने से लघु सिनेमा के निर्माण में रफ्तार आई है और उसके दर्शकों की संख्या में भी इजाफा हुआ है। मुख्यधार के सिनेमा से इतर समानांतर सिनेमा के अधिक नज़दीक माने जाने वाले लघु सिनेमा की कहानियां भी लीक से हटकर होती हैं। अल्पावधि के इस सिनेमा की खास बात यह है कि इसका निर्माण उद्देश्यपूर्ण होता है।

यूं तो फिल्म निर्माण की शुरूआत के समय से ही लघु सिनेमा अस्तित्व में रहा है लेकिन इंटरनेट के आ जाने के बाद इसके निर्माण व प्रदर्शन में तेज़ी आई है। इनके निर्माण में अति अल्प संसाधनों की आवश्यकता ने

The Asian Thinker

Year-3 Volume: IV, October-December, 2021 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

इन्हें और भी लोकप्रियता दी है। इंटरनेट के आगमन से पहले इनका प्रदर्शन केवल फिल्म समारोहों तक ही सीमित था लेकिन यूट्यूब व फेसबुक जैसे सोशल मीडिया ने अब इन्हें प्रदर्शन के नए डिजिटल मंच उपलब्ध करा दिए हैं।

इंटरनेशनल फेस्टिवल ऑफ शॉर्ट फिल्म्स ऑन कल्चर एंड टूरिज्म (आईएफएफसी), पुणे इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल (पीआईएफएफ), गोवा शॉर्ट फिल्म फेस्टिवल (जीएसएफएफ), जियो फिल्मफेयर शॉर्ट फिल्म अवार्ड्स कुछ ऐसे अनूठे फिल्म समारोह हैं, जिन्होंने लघु सिनेमा व्यवसायियों और उनके दर्शकों को एक-दूसरे के नज़दीक लाने का काम किया है।

लघु सिनेमा की लोकप्रियता ने मुख्यधारा के सिनेमा से जुड़े लोगों को भी इसकी ओर आकर्षित किया है। बांग्ला फिल्म निर्देशक सुजॉय घोष सहित अनुराग कश्यप और फरहान अख्तर जैसे बॉलीवुड निर्देशकों ने भी अपने संदेशों की अभिव्यक्ति के लिए इस माध्यम को चुना है।

शोध के उद्देश्य

1. हिंदी लघु सिनेमा में समाज के लिए संदेश का अध्ययन।
2. लघु सिनेमा में सामाजिक समस्याओं के लिए प्रस्तुत समाधानों का अध्ययन।

साहित्य का पुनरावलोकन

ए डिस्क्रिप्टिव स्टडी ऑफ कंटेंट ऑरिएंटेशन ऑफ सिलेक्टेड कंटेम्परेरी इंडियन शॉर्ट फिल्म्स शीर्षक के साथ लिखे गए डॉ. रीमा रॉय के शोध पत्र में चयनित निर्माण गृहों की लघु फिल्मों में मौजूद संस्कृति, सामाजिक संदेश व वैकल्पिक विचारों का अध्ययन किया है। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि लघु फिल्मों के निर्देशक अधिक यथार्थवादी फिल्में बनाते हैं। साथ ही डिजिटल उपकरणों की उपलब्धता के चलते वर्तमान पीढ़ी के बीच यूट्यूब बहुत लोकप्रिय है।

रोल ऑफ सिनेमा इन क्रिएटिंग सोशल अवेयरनेस शीर्षक के साथ लिखे अर्चना शर्मा के शोध पत्र में मुख्यधारा की सात चुनिंदा फिल्मों का अध्ययन किया गया है। शोध के परिणामों में सिनेमा को सामाजिक बदलाव का एक प्रभावी कारक बताया गया है। इसमें कहा गया है कि सिनेमा सामाजिक मुद्दों के प्रति लोगों को अपना दृष्टिकोण बदलने के लिए प्रेरित करता है।

सिनेमा ए पॉवरफुल मीडियम टू क्रिएट अवेयरनेस एबाउट सोशल इशूज: रेवती शीर्षक के साथ द इंडियन एक्सप्रेस समाचार पत्र में प्रकाशित एक साक्षात्कार में अभिनेत्री व फिल्मकार रेवती ने माना है कि सिनेमा सामाजिक मुद्दों के प्रति जागरूकता लाने का एक प्रभावी उपकरण है। रेवती ने आरती बागड़ी के निर्देशन में बनी लघु फिल्म – उड़ने दो में अभिनय किया है। वह कहती हैं कि फिल्म एक सशक्त माध्यम है और अगर फिल्मी हस्तियां सामाजिक मुद्दों पर बोलती हैं तो उन मुद्दों को सुना जाता है और उन पर लिखा जाता है।

The Asian Thinker

Year-3 Volume: IV, October-December, 2021 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

द क्यूरियस केस ऑफ द फिल्म्स डिवीजन: सम एनोटेशन्स ऑन द बिग्निंग्स ऑफ इंडियन डॉक्यूमेंट्री सिनेमा इन पोस्ट इंडिपेंडेंस इंडिया, 1940-1960 शीर्षक के साथ लिखे इस लेख में अनुजा जैन ने फिल्म्स डिवीजन की स्थापना (1948) के शुरुआती दो दशकों में की उसकी कार्य प्रणाली पर चर्चा की है।

सोशल इम्पेक्ट ऑफ इंडियन सिनेमा- एन ओडिसी फ्रॉम रील टू रियल शीर्षक के साथ लिखे गीतांजलि चंद्रा व सुधा भाटिया के शोध पत्र में मुख्यधारा की फिल्मों का अध्ययन किया गया है। जिसमें पाया गया कि पर्दे पर जिस तरह से सामाजिक समस्याओं और उनके समाधान के जो तरीके प्रस्तुत किए जाते हैं, वे कहीं न कहीं वास्तविक दुनिया को प्रभावित करते हैं और समाज बदलाव के लिए उनसे प्रेरणा लेता है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध कार्य विवरणात्मक अध्ययन के अंतर्गत आता है। इसे पूर्ण करने के लिए द्वितीयक आंकड़ों का इस्तेमाल किया गया है। अध्ययन के लिए दो लघु फिल्मों का चयन किया गया है। इनमें से एक फिल्म 'उड़ने दो' बाल शोषण की समस्या पर आधारित है और दूसरी फिल्म 'पेंसिल बॉक्स' लैंगिक समानता की ओर ध्यान आकर्षित करती हुई तीसरे लिंग की बात करती है। फिल्मों के विश्लेषण के लिए अंतर्वस्तु विश्लेषण विधि का उपयोग किया गया है।

चयनित फिल्मों का विश्लेषण एवं विमर्श

उड़ने दो

अवधि – 39.27 मिनट

यूट्यूब पर रिलीज की तारीख – 16 नवंबर, 2018

अब तक इस फिल्म को 48,336 व्यूज मिल चुके हैं।

आरती एस. बागड़ी ने इसका निर्देशन किया है और उन्होंने ही फिल्म की कहानी भी लिखी है। उषा काकड़े ने इसका निर्माण किया है।हमारामूवी ने इसे यूट्यूब पर जारी किया है।

समाज में व्यापत बाल शोषण की समस्या पर आधारित इस लघु सिनेमा में इस समस्या को संवेदनशीलता के साथ रखा गया है। फिल्म के कथानक में इस समस्या से जूझ रहे बच्चों व उनके अभिभावकों के मन की उधेड़बुन को दर्शाया गया है। कहानी में स्कूल की प्राचार्या एक मज़बूत किरदार बनकर उभरी हैं। कहानी की शुरूआत एक बच्चे युग के दाखिले के साथ होती है। बच्चा तंत्रिका तंत्र से संबंधित बीमारी ऑटिज्म से पीड़ित है और शोर को बर्दाश्त नहीं कर पाता।

स्कूल की प्राचार्या एक सुलझी हुई और समझदार महिला हैं, वह युग को अपने स्कूल में दाखिला दे देती हैं। स्कूल में युग की दोस्ती अपनी ही कक्षा की एक लड़की एपी से होती है। वह बच्ची बहुत हंसमुख है और उसे चिड़ियों के पंख इकट्ठे करने का शौक है। उसके स्कूल में बहुत से पक्षी हैं। वह हर रोज़ सुबह पक्षियों के

The Asian Thinker

पंख इकट्ठे करने के लिए निर्धारित समय से आधा घंटे पहले ही स्कूल पहुंच जाती है। वहीं स्कूल का एक चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी एपी को चिड़ियों के सुंदर पंख देने के बहाने उसका शोषण कर लेता है। कर्मचारी उसे इस बात को राज़ रखने के लिए कहता है। बच्ची परेशानी में पड़ जाती है, तभी एक दिन उसके स्कूल में सुरक्षित स्पर्श व असुरक्षित स्पर्श पर बच्चों के लिए एक कार्यशाला आयोजित की जाती है। इस दौरान बच्ची समझ पाती है कि आखिर उसके साथ क्या हुआ है। उसका मित्र युग अपनी दोस्त के व्यवहार में आए परिवर्तनों को महसूस कर रहा था।

बच्ची अपनी परेशानी अपने अभिभावकों को बताना चाहती है लेकिन उनकी अत्यधिक व्यस्तता के कारण यह संभव नहीं हो पाता। वह युग को अपनी बात बताती है। युग का भी अपने ही रिश्तेदार के द्वारा शोषण किया जा चुका है। वह अपनी मां को एपी के बारे में बताता है और उसकी मां एपी की मां से इस संबंध में बात करती है। बाद में वे स्कूल की प्राचार्या से इस पर बात करते हैं। प्राचार्या कर्मचारी के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करती हुईं उसे पुलिस के हवाले कर देती हैं। वह त्वरित रूप से पेरेंट-टीचर मीटिंग बुलाती हैं और अपने स्कूल में हुए इस हादसे की जानकारी सभी अभिभावकों को देती हैं। वह इस तरह की समस्याओं के प्रति मुखर होने की वकालत करती हैं ताकि बच्चों को इस अपराध और इसके चलते उनके बाल मन पर होने वाले प्रभाव से बचाया जा सके।

फिल्म बाल शोषण की सामाजिक समस्या की ओर ध्यान आकर्षित करती है और इसके समाधान के लिए दिशा भी दिखाती है। स्कूल की प्राचार्या जब युग व एपी की मां के समक्ष स्कूल में बच्चों को गुड टच बेड टच के लिए होने जा रहे कार्यक्रम के संबंध में बताती हैं तो अभिभावक का संवाद है, 'ये बहुत महत्वपूर्ण है कि शिक्षक व अभिभावक एकजुट होकर बच्चों को इस संबंध में बताएं, तभी वे कन्फ्यूज नहीं होते और सही ढंग से ये सेंसिटिव बातें समझ पाते हैं।' वहीं प्राचार्या का संवाद है, 'इस तरह के ओपन सेशन्स से बच्चों को खुलकर बात करने की हिम्मत आती है...अगर कोई व्यक्ति या उसका बिहेवियर उन्हें अजीब लगा हो।.... आफ्टर ऑल बच्चों की सुरक्षा ही अहम है।'

फिल्म की कहानी और उसकी बुनावट बहुत सीमित समय में बेहद रोचक और संवेदनशील ढंग से बाल शोषण की समस्या प्रस्तुत करती है। प्राचार्या, अभिभावकों के पात्रों को बेहद सशक्त ढंग से प्रस्तुत किया गया है। बाल पात्र युग और ऐपी भी बहुत सशक्त नजर आते हैं। कहानी में उद्देश्य परकता स्पष्ट होती है।

पेंसिल बॉक्स

अवधि – 29.45 मिनट

यूट्यूब पर रिलीज की तारीख – 29 मई, 2020

अब तक इस फिल्म को 433,507 व्यूज मिल चुके हैं।

अमित सेनॉरिया ने इसका निर्देशन किया है और उन्होंने ही फिल्म की कहानी भी लिखी है। शिप्रा चड्ढा ने इसका निर्माण किया है। पॉकेट फिल्म्स ने इसे यूट्यूब पर जारी किया है।

Year-3 Volume: IV, October-December, 2021 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

कश्मीर की पृष्ठभूमि पर बनी यह फिल्म लैंगिक समानता की बात करती है। कहानी में बिंबों के माध्यम से इस सामाजिक मुद्दे को छूने का प्रयास किया गया है। फिल्म का मुख्य पात्र एक मासूम बच्चा अप्पू है। बच्चे के अभिभावकों ने समाज के कायदों के डर से अपने बच्चे से उसकी ही एक हकीकत छुपाई हुई है।

अप्पू किसी भी अन्य बच्चे जैसा है, जिसे स्कूल जाना पसंद है, दोस्तों के साथ समय बिताना, बाहर खेलने के लिए जाना, स्कूल ट्रिप पर जाना पसंद है। लेकिन उसे बहुत सहेजा जाता है। स्कूल से बच्चों को ट्रिप पर ले जाया जाना है और इसके लिए बच्चों से कोई पैसा भी नहीं लिया जाना है। अप्पू इस बात से खुश है कि ट्रिप पर जाने के लिए पैसा नहीं दिया जाना है। वह सोचता है कि वह अपने माता-पिता को मनाकर इसके लिए अनुमति ले ही लेगा। वह जब स्कूल से घर पहुंचता है, तो अपने सारे काम व्यवस्थित व समयबद्ध तरीके से करता है। उसके अभिभावक इस परिवर्तन को देखकर हैरान हैं। उन्हें लगता है कि अप्पू को ज़रूर कुछ चाहिए इसलिए वह ऐसा कर रहा है। बाद में अप्पू अपनी मां से ट्रिप पर जाने की बात कहता है। लेकिन उसे कहा जाता है कि वह अभी छोटा है और उसे ट्रिप पर नहीं भेजा जा सकता। इस पर अप्पू कहता है कि उसके दोस्त भी उसकी उम्र के हैं, जब वे जा रहे हैं, तो वह क्यों नहीं जा सकता। उधर उसका एक मित्र भी उस पर ट्रिप पर चलने के लिए दबाव बनाता है लेकिन बच्चे के माता-पिता पैसे की तंगी बताकर उसे ट्रिप पर भेजने से मना कर देते हैं।

अप्पू की मां कहती है कि वह सच्चाई को न तो बच्चे को बता पा रही है और न ही उससे छुपा पा रही है। अप्पू नाराज़ है, वह ट्रिप पर नहीं जा सका। उधर ट्रिप पर जाने के लिए अप्पू का इंतज़ार कर रहा उसका दोस्त भी उदास हो जाता है। ट्रिप से लौटने के बाद अगले दिन वह दोस्त अप्पू के घर जाता है तो उसे वहां उसके घर के सामने बहुत भीड़ दिखाई देती है। वह भीड़ को चीरकर आगे बढ़ने की कोशिश करता है। वहां हिजड़ों का एक समूह है, जो अप्पू को अपने साथ ले जाने की कोशिश कर रहा है। अप्पू की मां उनके आगे गिड़गिड़ाती है कि बच्चे को उसके पास रहने दें, लेकिन वहां मौजूद मुख्य हिजड़ा कहता है कि.... बहन मैं तेरा दर्द समझती हूं... ये तेरा बच्चा ना है... हमारा बच्चा है..हमारा...तूने इसे जितनी देर रखना था... तूने रखा ना.. बस.. अब हमें चाहिए। हिजड़ा समाज की कड़वी सच्चाई को उजागर करते हुए कहता है कि... बहन तूने इसे पैदा किया है तो तू तो इसे अपना लेगी लेकिन ये लोग (आस पास खड़ी भीड़) इसे नहीं अपनाएंगे... और अब इससे तो क्या अब तो ये तेरे पूरे खानदान से किनारा कर लेंगे.... और धीरे-धीरे तेरा अपना परिवार इसको बोझ समझने लगेगा..बोझ... इसीलिए कहती हूं इसे हमें दे दे... मोह छोड़ दे इसका। आखिर में हिजड़े ये कहते हुए चले जाते हैं कि... रख ले इसे... आज हम आए हैं तेरे पास इसे लेने... और कल तू खुद आएगी इसे हमारे पास लेके..।

अप्पू इस घटना के बाद स्कूल जाना चाहता है लेकिन उसे स्कूल जाने नहीं दिया जाता। आसपास का समाज उसे अजीब निगाहों से देखता है, जो सच्चाई अब तक पर्दे के पीछे थी, वह अब लोगों के सामने आ गई थी। अप्पू स्कूल जाने के लिए बेचैन रहता है। फिल्म का अंत सुखद है, बच्चे को स्कूल भेज दिया जाता

है, उसका दोस्त भी उसे देखकर बहुत खुश होता है। कहानी के आखिर में हिजड़ा फिर नज़र आता है। जब अप्पू अपने दोस्त के साथ स्कूल से घर लौट रहा होता है तो घर के नज़दीक हिजड़ा आकर उसके कंधे पर हाथ रखता है। हिजड़े की मौजूदगी अप्पू, उसके दोस्त और उसके घर में मौजूद अभिभावकों को एक बार फिर डरा देती है लेकिन हिजड़ा बच्चे को उसके माता-पिता को सौंप देता है। हिजड़ा जब वापस जाने के लिए मुड़ता है तो उसकी आंखों में आंसू होते हैं। उसके कानों में उसके अपने अतीत की आवाज़ें गूंज रही होती हैं (इसकी जगह इस घर में नहीं है.... अरे... हिजड़ा है ये... इसे यहां रखा तो नाक कट जाएगी हमारी... क्या मुंह दिखाएंगे हम लोगों को... इसे यहां नहीं रखूंगा।) तो आंखों में अतीत के भूले हुए दृष्य फिर चमक उठते हैं।

फिल्म समाज में तीसरे लिंग के प्रति व्यापत असमानता और लोगों के उसके प्रति खराब रवैये को दर्शाती है। साथ ही इस तकलीफ से गुज़र रहे हिजड़ों के प्रति संवेदनशीलता भी जागृत करती है। इसमें एक स्पष्ट संदेश है कि किसी भी तरह की शारीरिक कमी अथवा विसंगति के लिए वह व्यक्ति जिम्मेदार नहीं होता है, जबकि दुनिया और समाज उसे व उसके घर वालों को जिम्मेदार ठहराते हैं। तीसरे लिंग को भी समाज में वही दर्जा मिलना चाहिए जो कि पहले के दोनों लिंगों को मिला हुआ है, उन्हें भी समाज में स्वीकृति मिलना चाहिए।

निष्कर्ष

लघु सिनेमा ने अभिव्यक्ति को नए आयाम प्रदान किए है। अल्पावधि का यह सिनेमा बहुत प्रभावी तरीके से समाज में व्याप्त समस्याओं, विसंगतियों, असमानताओं आदि को उजागर करने में पूरी तरह सक्षम है। युवा फिल्मकारों के लिए लोकप्रिय बन चुकी सिनेमा की यह विधा इसलिए और भी महत्वपूर्ण हो जाती है कि इसके ऊपर व्यवसायिक दबाव नहीं होते हैं। यही वजह है कि ये नितांत मनोरंजक फिल्में नहीं होतीं, इनमें अधिकतर फिल्में उद्देश्यपूर्ण होती हैं और उनमें समाज के लिए कुछ न कुछ संदेश होता है।

संदर्भ

Aarti S. Bagdi (निर्देशक). (2018). *Udne Do* [चलचित्र].

Amit Sanouria (निर्देशक). (2020). *Pencil Box* [चलचित्र].

Dr Reema Roy. (2020). A descriptive study of the Content Orientation of Selected Contemporary Indian Short Films. *Global Media Journal-Indian Edition* .

Geetanjali Chandra, & Sudha Bhatia. (2019). Social Impact of Indian Cinema – An Odyssey from Reel to Real. *Global Media Journal (Arabian Edition)* .

https://mediaindia.eu/cinema/short-films-growing-in-stature-in-india/

https://www.researchgate.net/publication/341425740_Role_of_Cinema_in_Creating_Social_Awareness/link/5ebf8720a6fdcc90d67a393b/download

The Asian Thinker

https://indianexpress.com/article/entertainment/bollywood/udne-do-actor-revathy-cinema-social-issues-5452232/

https://www.academia.edu/8536383/Curious_Case_of_the_Films_Division_Some_Annotations_on_the_Beginnings_of_Indian_Documentary_Cinema_in_Postindependence_India_1940s_1960s

The Asian Thinker